Vol. 4, Issue-2 (July 2015) pp. 42-45 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

ठाकुर सुखवासी चन्द्र उर्फ बुलांकीराम और सीमान्त का शास्त्रीय संगीत

डॉ.पंकज उप्रेती
एसि0 प्रोफेसर, विभाग प्रभारी संगीत
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग (पिथौरागढ़) उत्तराखण्ड
Email- editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

ठाकुर सुखवासी चन्द्र मास्टर उर्फ बुलांक राम भारतीय शास्त्रीय संगीत के उन प्रचारकों में से रहे हैं, जिन्होंने जीवन की कठोर यातनाओं को रोमांच बनाकर जी लिया और संगीत सेवा में समर्पित होकर अलविदा हुए। सुखवासी का जन्म 1900 में फर्रुखाबाद (उ0प्र0) में हुआ तथा महान संगीतज्ञ पं0ओमकारनाथ ठाकुर इनके गुरु रहे हैं।[1] शुक्रवार 11 मार्च 1972 को दिन में 11 बजकर 30 मिनट पर पिथौरागढ़ में बुलांकी का निधन हो गया। अपने होश संभालने से लेकर अपनी जीवन यात्रा को रोचक बनाकर जीने वाले सुखवासी चन्द्र उर्फ बुलांकी राम के बारे में जो जानकारी मिलती है उसके अनुसार– चेचक की भयानक बीमारी फैलने से उनके माता–पिता का निधन हो गया। देहरादून में इनके चाचा की तम्बाकू की दुकान थी, बालक सुखबासी अपने नशेड़ी चाचा के साथ तीन–चार साल रहे। इसके बाद एक हलवाई बालक की हालत देखकर उसे अपने साथ ले गया और बारह साल तक यह हलवाई के पास रहे। इसी बीच एक साधु सुखवासी को अपने साथ ले गया और संगीत की शिक्षा देने लगा। बाद में उन्होंने विलक्षण प्रतिभा के इस बालक को संगीतज्ञ पं.ओमकारनाथ ठाकुर के साथ भेज दिया। पंडित जी की देखरेख में उन्होंने संगीत के गुर सीखे।[2]

संगीत में पारंगत बुलांकी अपने गुरु की सेवा करना चाहते थे। गुरु ने 'ठाकुर' उपाधि से उन्हें सम्मानित किया, जिससे उनका नाम ठाकुर सुखवासी पड़ गया। गुरु आशीर्वाद से वह ध्रुपद–धमार, ख्याल गायन शैलियों के साथ–साथ भजन, गज़ल, गीत में निपुण थे। कई गीतों की स्वरलिपियां उन्होंने बनाकर अपनी शिष्य मण्डली को सिखाई। तबला और सितार वादन में भी वह खासी जानकारी रखते थे।[3] संसाधन विहीन दुगर्म इलाकों में बुलांकी ने सम्पर्क रखा और शास्त्रीय संगीत के प्रति जन–जन में अभिरुचि पैदा की। बचपन की ठोकरों के बाद उनकी प्रीति संगीत से थी और वह फक्कड़ थे। ऐसे में उनका कोई ठिकाना नहीं था। उनकी एक रचना में ऐसा उल्लेख भी है, जो 'श्री ठाकुर सुखवासी चन्द्र' नाम के हर प्रथम अक्षर को लेकर रची गई है–

श्री *परमात्मा अब तेरे बिना, क्या है ठिकाना।*
ठा *टों की ये दुनिया में जो है, रंग जमाना।।*
कु *मार्ग से बचा कर, सुमार्ग में लाकर।*
र *खियो ये लाज मोरी, अब क्या तुम्हें बताना।।*
सु *ख में तुम्हें बिसारत, दुख में तुम्हें निहारत।*
ख *राबी यही है भगवन, इसको अलग हटाना।।*
ब *वला ही हो गया मन, माया में फंस के ऐसा।*
सी *धा सा ध्यान छोड़ा, उल्टा में जी बहाना।।*
चं *दा ग्रहण का जैसा, पापों ने आके जकड़ा।*
द्र *ग खोल शीघ्र आ के, ये त्रास को मिटाना।।*[4]

संगीत गायन–वादन के साथ ही वह शास्त्र के प्रकाण्ड थे। उन्होंने विभिन्न रागों में कई रचनाएं 'सुखवासी' नाम से लिखी तथा कई भजन, गीत गज़लों को संग्रहित किया। उनकी हस्तलिखित कई पुस्तकें आज भी उनके शागिर्दों व लेखक के पास उपलब्ध हैं।[5] उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ मुख्यालय व सीमावर्ती गाँवों तथा नेपाल देश के दुर्गम गाँवों में बुलांकीराम का गढ़ सा बन चुका था और उनके शिष्यों की लम्बी सूची है।[6] दुर्भाग्य से इस विद्वान की साधना और परम्परा को उतना आगे

नहीं ले जाया जा सका है, जितना आगे होना चाहिये था। 'सुखवासी' नाम से लिखा गया एक गीत प्रस्तुत है–

श्री *कृष्ण हे दयामय, अब हमने यही जाना।*
ठा *ना है तुमने भगवन, भारत से रूठ जाना।।*
कु *ल आर्य देश में अब, अनहित की धुन मची है।*
र *खा है लाज भारत, तो शीघ्र ही बचाना।।*
सु *ख में प्रफुल्लितों से, था ये स्वतंत्र भारत।*
ख *बर नहीं थी ऐसा, आयेगा जो जमाना।।*
बा *तों ही बातों में बस, वर्षों गुजर गई हैं।*
सी *ता व द्रोपदी की, मन में है याद लाना।।*
चं *दा में ना चमक है, तारों में ना झलक है।*
द्र *ग से निहारो भगवन, भारत का क्या ठिकाना।।*[7]

ठाकुर सुखवासी के निजी जीवन से पता चलता है कि उक्कू–वाकू (नेपाल) में उन्होंने विवाह कर लिया। इस विवाह के बारे में भ्रामकता भी रही जिस विवाद में कुछ लोगों ने उन्हें काली नदी में फैंक दिया। किसी प्रकार वह बच निकले और पुनः पिथौरागढ़ रहने लगे। सत्य घटना चाहे कुछ भी हो बुलांकी ने जो कुछ अपने शिष्यों को बताया उसके अनुसार उन्हें साजिश के तहत फंसाया गया। इस घटना के समय उनकी हस्तलिखित कई पाण्डुलिपि नदी में बह गई। नेपाल के उक्कू, बांकू, गढ़ी, बैतड़ी सहित कई गाँवों में आज भी जो छुटपुट संगीत की बैठकें होती हैं उनमें उस्ताद जी के शिष्यों का योगदान है।[8]

भारत–नेपाल सीमा के आस–पास के गाँवों में लम्बे समय तक रहते हुए उस्ताद ने भारतीय शास्त्रीय संगीत का जिस प्रकार से प्रचार किया, उसे सुनकर बहुतों को आश्चर्य होगा। 1922 में जिला बागेश्वर के बाद जब वह पिथौरागढ़ जिले के थल होते हुए डीडीहाट कस्बे में (वर्तमान में नगर और नये जिले की घोषणा के बाद जिला मुख्यालय बनने की स्थिति में है) पहुँचे तो संगीत के बेहद शौकीन परसीलाल वर्मा[8] ने उन्हें सम्मान सहित अपने वहाँ रखा और संगीत विषयक जानकारी ली। इस पर बुलांकी ने एक तख्ते पर 'सा' से लेकर तार सां तक निशान बनाकर लोगों को हारमोनियम के बारे में बताया। बाद में देहरादून से तीन हारमोनियम मंगवाये गये। लोगों के लिये हारमोनियम कौतुहल ही था, क्योंकि लोकवाद्य यन्त्र– हुड़का, ढोलक, ढोल, तुरुही के अलावा कैलास मानसरोवर यात्रा पर आने वाले साधुओं के हाथ में वीणा व सितार जैसे वाद्ययन्त्र ही लोगों ने देखे थे। उस समय सड़कें और वाहनों का प्रचलन कम था, पैदल यात्राओं पर जाने वाले कई स्थानों पर रुकते–रुकते अपनी यात्रा पूरी करते थे। उस्तार बुलांकी ने भी अपनी संगीत यात्रा में कई पड़ाव देखे और अन्त में पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय उन्हें रास आया। उनके शिष्य रमेश चन्द्र शर्मा बताते हैं– उस्ताद कानों में बड़े–बड़े कुण्डल पहनते थे, जिन्हें पहाड़ में 'बुलांक' कहा जाता है, इसी कारण उन्हें ठाकुर सुखवासी के अलावा बुलांकीराम कहा जाता था।[10]

गायन–वादन के क्रियात्मक पक्ष के साथ–साथ बुलांकीराम निरन्तर अध्ययन भी करते थे। 'सुखवासी' नाम से कई रचनाओं के साथ–साथ उनकी स्वरलिपि बनाकर अपने शिष्यों को उनका अभ्यास भी करवाया था। राग यमन में उनकी लिखी एक रचना इस प्रकार है–

"गाओ गुण जगदीश्वर के, परमपिता परमेश्वर कै।
ये माया भ्रम रैन स्वप्न सा, ना फंस इस संसार नश्वर के,
'सुखवासी' सब तज भय मन के, बार बार कमलेश्वर के।।"[11]

इसी प्रकार राग भूपाली तीन ताल में निबद्ध एक रचना इस प्रकार है–

''तन जीवन धन उन पर वारूं, जो त्रिभुवन पति सब सुखदायक।
रहत अकेला न्यारा।।
अति अगम्य करुणा के सागर, किन हुं न पायो पार।
आदि अन्त कछु ना हिन उनको, 'सुखवासी' सब जगत पासारा।।''[12]

प्रचलित और अप्रचलित रागों में रचनाओं को रचते हुए उस्ताद बुलांकी उनका प्रस्तुतिकरण करवाते थे। खमाज राग की एक रचना प्रस्तुत है–

''साज साजन मोरे काहे बिरमाये।
उन बिन थिरत रहत है जियरा, अंखियन नींद न आये।।
रात अन्धेरी दामिनी दमक, विरह सतावत डर मोहिं लागत।
'सुखवासी' पिया ऐसे निठुर भये, नाहक मोह बढ़ाये।।''[13]

शास्त्रीय संगीत के प्रचार के साथ–साथ इस विधा से लोगों को जोड़ने के लिये उन्होंने पहाड़ में प्रचलित रामलीला और होली में भी सहभागिता की और अपनी रचनाओं से दर्शकों को मुग्ध किया। पहाड़ की परम्परागत रामलीला में उनके लिखे गीत, गज़ल भी गाये जाने लगे थे। थियेटर के प्रभाव से भरी एक रचना इस प्रकार है–

''शक्ति का तीर लक्ष्मण, सीने में गार होता।
जो पहले जानता जो, क्यों ऐसा ख्वार होता।।
तेरी लाश को अवध में, किस तौर से पहुँचाऊँ।
माता निकाल लेती, दिल का गुबार जो था।।
ठक नारि कारणे जो, भाई को है गंवाया।
सीता को त्याग देता, फिर क्यों रे रार होता।।
'सुखवासी' विचार मन में, बनवासी जो माँ बनाये।
न मानता पिता के, बचनों का टार होता।।''[14]

पहाड़ में रहते हुए उस्ताद को कुमाउनी और नेपाली बोली–भाषा का अभ्यास हो चुका था। उन्होंने नेपाली में भी कई गीतों की रचना की। अपने इन प्रयोगों से वह गाँव–गाँव तक संगीत की अलख जगाने में सफल रहे। नेपाली में लिखा एक नेपाली राष्ट्रीय गीत का उदाहरण प्रस्तुत है–
''अहा 'सुखवासी' के राम्रो लाग्छस्, स्वतंत्र नेपाल स्वतंत्र नेपाल।

सचेत भइकन सुना सबै ले, स्वतंत्र नेपाल स्वतंत्र नेपाल,
बतास मा नीर मा गगन मा, कुरा मा तनमा हर एक मानमा।
कस्तो मधुर ध्वनि सुनाई दीन्छ, स्वतंत्र नेपाल स्वतंत्र नेपाल,
हर एवटा घर मा हर एवटा बनमा, मची छ त्यो धुन स्वतंत्र को।
लौ केटा कटी हरु त्यस्तोही भन्छन, स्वतंत्र नेपाल स्वतंत्र नेपाल,
अघि देखिंथियो स्वतंत्र नेपाल, रला फेरि पनि स्वतत्र नेपाल।
दिखाइ पर्छ त्यो स्वप्न मा पनि, स्वतंत्र नेपाल स्वतंत्र नेपाल,
कुमारि हिमगिरि अटक कटक सम्म, बजोरुडंका स्वतंत्रा को।
भनूंला सुरासुर मिलेर सबै जन, स्वतंत्र नेपाल स्वतंत्र नेपाल।।''[15]

ठाकुर सुखवासी चन्द्र उर्फ बुलांकी राम ने संगीत के प्रचार–प्रसार के लिये जो भी सद्प्रयास किये उस परम्परा को उनकी शिष्य मण्डली द्वारा किसी न किसी रूप में आगे बढ़ाया गया है। बुलांकी राम जी से सम्बन्धित जानकारियों को जुटाने के लिये अभी शोध की काफी गुंजाइश है।

सन्दर्भ–

1. बुलांकी राम के 87 वर्षीय शिष्य त्रिलोचन पुनेठा (ग्राम पुनेड़ी) पिथौरागढ़ व 75 वर्षीय एम.सी. मखौलिया (ग्राम रई)पिथौरागढ़ से बातचीत।
2. पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय से लगे ग्राम धनौड़ा में अपने परम शिष्य गंगासिंह पडियार के वहाँ अपना अन्तिम समय बिताने वाले बुलांकी राम ने यह सारी घटनाएं इस परिवार को बताई थी। अपनी कई हस्तलिखित पुस्तकें, खाने के वर्तन इत्यादि सामान वह यहीं छोड़ गये।
3. बुलांकी के 70 वर्षीय शिष्य सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य रमेश चन्द्र शर्मा (ग्राम लिन्ठ्ड़ा)पिथौरागढ़ से बातचीत के आधार पर।
4. संगीत मणि, लेखक– डॉ.पंकज उप्रेती, पृष्ठ–8
5. हिमालय संगीत शोध समिति हल्द्वानी जिला नैनीताल के संग्रह में, बुलांकी के शिष्य गंगादत्त पडियार, लालूराम, रमेश चन्द्र शर्मा, भानूराम, हीराबल्लभ पाण्डे सहित कई के पास हस्तलिखित पाण्डुलिपि व पुस्तकें हैं।
6. संगीत मणि, लेखक– डॉ. पंकज उप्रेती, पृष्ठ– 11 से 13
7. वही, पृष्ठ– 10
8. सन् 2003–04 में रा0स्ना0महाविद्यालय पिथौरागढ़ में संगीत विभाग प्रभारी रहते हुए लेखक ने स्वयं सीमा क्षेत्र नेपाल के गाँवों का भ्रमण किया। जौलजीवी और झूलाघाट के रास्तों से नेपाल में प्रवेश कर उस्ताद के बारे में जानकारी जुटाई।
9. 90 वर्षीय परसीलाल वर्मा आज भी डीडीहाट जिला पिथौरागढ़ में रहते हैं और इनका परिवार संगीत का शौकीन होने के नाते बैठकी होली की महफिल करवाता है। उन्होंने लेखक को उस्ताद और इस क्षेत्र के संगीत के बारे में काफी जानकारी दी।
10. लिन्ठ्यूड़ा जिला पिथौरागढ़ निवासी उस्ताद के शिष्य
11. चण्डाक जिला पिथौरागढ़ निवासी 77 वर्षीय सारंगी वादक व गायक भुवन चन्द्र जोशी से प्राप्त। श्री जोशी उस्ताद की कई रचनाओं को आज भी महफिलों में मस्त होकर गाया करते हैं।
12. संगीत मणि, लेखक– डॉ. पंकज उप्रेती, पृष्ठ– 15
13. वही, पृष्ठ– 16
14. वही, पृष्ठ– 25–26। इसके अलावा बड्डा जिला पिथौरागढ़ की रामलीला में इस प्रकार के गीत लेखक ने स्वयं सुने हैं।
15. संगीत मणि, लेखक– डॉ. पंकज उप्रेती, पृष्ठ– 20